



ओडिशा की पट्ट चित्रकला : अतीत एवं वर्तमान

कौशिकी चौहान,

शोध छात्रा, चित्रकला विभाग, दृश्य कला संकाय,

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

सारांश

भारतीय समाज अपनी प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं, अद्वितीय विविधता, सहिष्णुता एवं समावेशिता के लिए विश्व विख्यात है। यह न केवल धर्म अपितु भाषा, कला, संगीत, साहित्य, रंगमंच, नृत्य, खान-पान, व्रत, त्यौहार, वस्त्र-परिधान, संस्कार, अनुष्ठान, रीति-रिवाज, जीवन शैली जैसे प्रत्येक पहलुओं को समाहित किए हुए हैं। ओडिशा के पट्ट चित्रकला भारतीय चित्रकला परंपरा की एक बहुमूल्य विरासत है, जो धार्मिक आस्थाओं, सांस्कृतिक पहचान, तथा उत्कृष्ट कलात्मक कौशल का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करती है। पट्ट चित्रकला की उत्पत्ति लगभग 12वीं शताब्दी से मानी जाती है, जिसका गहरा संबंध ओडिशा की सचित्र पांडुलिपि, वैष्णव एवं जगन्नाथ संप्रदाय से रहा है। प्रारंभिक काल में जहाँ पट्टचित्रों के विषय बौद्ध, तांत्रिक एवं पौराणिक कथाओं पर आधारित थे, वहीं समय के साथ यह कला मुख्यतः जगन्नाथ परंपरा, रथयात्रा एवं मंदिर अनुष्ठानों की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम बन गई। पट्टचित्रों के निर्माण अत्यंत सजावटी, कठिन, एवं प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित होते हैं, जिनमें सूती वस्त्र, खनिज रंगों तथा हस्तनिर्मित तुलिकाओं का प्रयोग किया जाता है। समकालीन समय में आधुनिकीकरण, डिजिटलीकरण तथा बाजारवाद ने इस कला को नए अवसर प्रदान किए हैं किन्तु हस्तनिर्मित परंपरा, पट्टचित्रों की गुणवत्ता और कलाकारों की आजीविका को प्रभावित भी किया है। प्रस्तुत शोध पत्र पट्टचित्रों के वर्तमान स्वरूप, सतत विकास, संरक्षण एवं इनमें नवाचार को परिलक्षित करता है। वैश्वीकरण के प्रभाव और डिजिटल मीडिया तकनीक के प्रयोग से यह कला अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रदर्शित की जा रही है जिससे इसकी लोकप्रियता अंतरराष्ट्रीय स्तर तक हो गई है। वैश्विक सांस्कृतिक पहचान मिलने से आज विदेशी पर्यटक इस कला की ओर आकर्षित हो रहे हैं जिससे पर्यटन उद्योग को भी बढ़ावा मिल रहा है। इसके पृथक यह अध्ययन पट्टचित्रों के विषय-वस्तु में परिवर्तन, पारंपरिक पट्ट चित्रकारों की घटती सहभागिता, मशीन निर्मित उत्पादों के बीच संघर्ष की चुनौतियों को भी रेखांकित करता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि यह कला केवल सौंदर्य बोध व चित्रांकन का माध्यम ही नहीं अपितु समाज के बदलते स्वरूप, आधुनिक दृष्टिकोण, और सृजनात्मक स्वतंत्रता को भी अभिव्यक्त करती है।

- **मुख्य शब्द** : रथयात्रा, अनुष्ठान, सांस्कृतिक पहचान, जगन्नाथ संप्रदाय, पांडुलिपि

भारत के पूर्वी तट पर स्थित ओडिशा राज्य अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर और कलात्मक परंपराओं के लिए विश्व विख्यात है, जो पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में छत्तीसगढ़, उत्तर में झारखंड और दक्षिण में आंध्र प्रदेश राज्य की सीमाओं को छूती हैं। यह क्षेत्र न केवल भारत के ऐतिहासिक और धार्मिक परंपराओं का प्रतिनिधित्व करता है वरन् कलात्मक सृजन की विभिन्न अभिव्यक्तियों को भी संजोये हुए हैं, जो भारतीय संस्कृति के विविधता को उजागर करता है। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता, मंदिर-वास्तुकला, मूर्तिकला, मृणमय कला के साथ ही वस्त्रकला, लोककला, संगीत, नृत्य और साहित्य की भी अपनी एक विशिष्ट पहचान है। उपर्युक्त समस्त विशेषताओं के प्रत्यक्ष प्रमाण हमें भुवनेश्वर (मंदिरों का शहर), पुरी का जगन्नाथ मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर ओडिसी नृत्य, पट्टचित्र कला इत्यादि क्षेत्रों में स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं।

पट्ट चित्रकला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :-

पट्टचित्र कला वस्तुतः कपड़े पर बनाए जाने वाली एक प्रकार की स्क्रोल पेंटिंग है जिसकी उत्पत्ति 12वीं ई. के आसपास मानी जाती है। संस्कृत भाषा में पट्ट का शाब्दिक अर्थ कपड़ा, काष्ठपट्ट, प्रस्तरखंड तथा जगन्नाथ पट्टचित्र,



<https://www.gitanjaliawards.com/traditional-pattachitra-painting-of-lord-jagannath.html>

चित्र का अर्थ तस्वीर होता है, अर्थात् ऐसे कथाचित्र जो कपड़े पर बनाए जाते हैं और जिनके निर्माण में स्थानीय और प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग किया जाता है। वैसे मूल रूप से पट्टचित्रों के विषयवस्तु धार्मिक होते हैं परंतु समकालीन जीवन और सामाजिक सोच को भी इसमें प्रमुखता से स्थान दिया गया है। पट्टचित्र कला से पूर्व ओडिशा में सचित्र पांडुलिपियों का प्रचलन था। पांडुलिपि वस्तुतः लेखन व चित्रण दोनों के लिए प्रयुक्त होता था, जिसके निर्माण के लिए ताड़ के पत्रों को सुखाकर तथा चिकना करके, लेखन व चित्रण योग्य बनाया जाता है। इन पांडुलिपियों में रामायण, महाभारत जैसे महाकाव्य तथा पुराणों के साथ ही साथ बौद्ध ग्रंथ यथा- प्रज्ञापरमिता के कथा साहित्य को लिपिबद्ध कर चित्रित किया गया है। पांडुलिपि चित्रण ओडिशा के साथ-साथ बिहार, बंगाल में भी लोकप्रिय था। पट्टचित्रों के विषय-वस्तु समय, काल और परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तित होते रहे हैं। पुरातन

समय में पट्टचित्रों के विषय मुख्यरूप से बौद्ध और तांत्रिक ही थे, किंतु कुछ मात्रा में वैदिक पौराणिक कथाओं को भी चित्रित किया गया है। वर्तमान में ओडिशा के पट्टचित्रों का मुख्यरूप से विषय वैष्णव धर्म है और उसमें भी विशेष रूप से जगन्नाथ परंपरा पर आधारित है। पट्टचित्रों के विकास में ओडिसा पांडुलिपि चित्रण की परंपरा और शैली का प्रभाव पड़ा और यही कारण है की शैली के आधार पर पट्टचित्रों और पांडुलिपि चित्रण में समानता दिखाई पड़ती है। जैसा की विदित है कि पट्टचित्रों के निर्माण का विषय मुख्यरूप से वैष्णव अथवा जगन्नाथ परंपरा से संबंधित है इसलिए जगन्नाथ पूजा, रथयात्रा और उससे जुड़ी कथाओं तथा अन्य प्रक्रियाओं का विशद रूप से ओडिशा के पट्टचित्रों पर अंकन हुआ है। अनासर काल (15 दिन की वह अवधि जब देवता उपचार के लिए एकांतवास में जाते हैं) तथा 'नवकलेवर' समारोह (हर 12 वर्षों में जब भगवान की लकड़ी की मूर्ति बदली जाती है) में जब भगवान जगन्नाथ, बहन सुभद्रा और बलभद्र की मूर्तियों को सार्वजनिक दर्शन से दूर रखा जाता है तब पट्टचित्रों के माध्यम से ही भगवान के दर्शन व अस्थाई पूजा की जाती है। यह परंपरा पट्टचित्रों के धार्मिक महत्व को दर्शाती है। पट्टचित्रों के निर्माण व संरक्षण में कुछ विशेष समुदायों जैसे महापात्र (चित्रकार जाति) ने पारंपरिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी इस कला को सीखने व हस्तांतरित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कलाकृतियों को बनाते समय कलाकार विशेष रीति-रिवाजों का पालन करते हुए अपनी समर्पण भावनाओं को दर्शाते हैं। यह न केवल चित्रकारी करते हैं अपितु पट्टचित्र के हर पहलू को पट्ट चित्रण पद्धति,



<https://www.dsource.in/resource/patachitra-painting-bhubaneswar-orissa/making-process>
स्वयं तैयार करते हैं जिनमें पट्ट तैयार करने, प्राकृतिक रंग बनाने और चित्रों को सजाना भी शामिल है। ये कलाकार अपने काम में पारंपरिक तकनीकों का उपयोग करते हैं जो उनकी कला को विशिष्ट और अद्वितीय बनाती है। इस कलाकृति में महिलाएं केवल हाथ बताती हैं, अंतिम परिष्करण के लिए मास्टर कलाकार पुरुष ही होते हैं। यह कला ओडिशा के अनेक ग्रामीण कलाकारों व उनके परिवारों की आजीविका का प्रमुख स्रोत है। पट्टचित्रों में ओडिशा की समृद्ध लोक संस्कृति, रीति-रिवाजों, त्यौहार, परंपराओं और सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों को चित्रित किया जाता है। ओडिसा पट्टचित्र कला की यह परंपरा परलाखेमाड़ी, चिकिति, सोनपुर, पुरी, रघुराजपुर जैसी जगहों पर आज भी जीवित है। रघुराजपुर भारत का एकमात्र ऐसा गांव है जहां आज भी ग्राम परिवार के सभी सदस्य इस कार्य में लगे हैं।

पट्टचित्र पद्धति अत्यंत प्राचीन, जटिल एवं सजावटी है। पट्टचित्र का आधार कैनवस (सूती कपड़ा) होता है जिसे पट्ट कहते हैं। पट्ट तैयार करने के लिए महिला कलाकार सबसे पहले इमली के बीजों को रात भर भिगोकर और उसमें खड़िया पत्थर को मिलाकर गोंद (तामरिंड गोंद) तैयार करती है। गोंद के मिश्रण को कपड़े पर दो-तीन बार लेपित कर खुली हवा में सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है तथा बाद में उसकी सतह को चिकना एवं चमकदार बनाने के लिए चिकनी पत्थर या सीप से लेप लगे कपड़े के ऊपर घिसाई की जाती है और इस प्रकार पट्ट चित्रण के लिए तैयार हो जाता है। इस प्रक्रिया के बाद सर्वप्रथम पट्ट पर काले रंग से विषय की बाह्य आकृति तैयार की जाती है जिसके बाद बने आकृतियों और पृष्ठभूमि को रंग से भरते हैं। इसमें प्रयुक्त रंग पूर्णतः स्थानीय और प्राकृतिक होते हैं। प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त रंग जैसे हिंगुलाल नामक पत्थर से लाल रंग, हैरिताल नमक पत्थर से पीला रंग, शंक के चूर्ण से सफेद रंग, खदानिल नामक पत्थर से नीला रंग, नारियल के जले हुए छिलके से काजल या काला रंग लगाए जाते हैं। इस पेंटिंग में प्रयोग किए जाने वाली तूलिका जानवरों के बालों से बनाई जाते हैं जिसमें सबसे आम गिलहरी और बकरियों के फर हैं। ये तूलिकाएँ पट्ट चित्रों की जटिल डिजाइनों, अलंकरणों के लिए जरूरी बारीक एवं विस्तृत काम करने में सक्षम होते हैं। चित्रों की सीमाओं को ज्यामितीय आकृतियों, फूलों और पत्तियों के बार-बार दोहराए जाने वाले जटिल पैटर्न एवं डिजाइन से अलंकृत किया जाता है जो केंद्रीय रचना को फ्रेम करती है एवं पेंटिंग के मुख्य विषय को सीमा से पूरक बनाती हैं। यह चित्र को खूबसूरती से तैयार किए गए फ्रेम के भीतर संलग्न करती है और उसे एक पूरी संरचना प्रदान करती है। अंत में पेंटिंग पूरी होने के पश्चात इसे प्राकृतिक वार्निश से लेपित किया जाता है।

वर्तमान परिदृश्य :- आज पट्टचित्र कला धार्मिक उद्देश्यों तक सीमित ना रहते हुए पर्यटन, फैशन डिजाइन, होम डेकोर, वॉल म्यूरल, डिजिटल प्रिंटिंग जैसे क्षेत्रों में भी पहचान बना रही है। कलाकारों ने पौराणिक कथाओं के साथ-साथ समकालीन विषयों जैसे पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक लोक जीवन को साड़ी पर अलंकृत पट्टचित्र मोटिफ , <https://pin.it/3FpARrv4D> भी चित्रित करना आरंभ कर दिया है। आधुनिकीकरण के प्रभाव, डिजिटलीकरण और तकनीकी विकास से कलाकारों के अपनी तकनीक, विषय वस्तु और माध्यमों में बदलाव के कारण इस नवीन पद्धति का जन्म हुआ। भारतीय लोक एवं पारंपरिक कलाओं में पट्ट चित्रकला ने अपनी विशिष्ट शैली, रंग-संयोजन तथा धार्मिक-सांस्कृतिक विषयवस्तु



के कारण वैश्विक स्तर पर विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त की है। संचार माध्यमों तकनीकी विकास, पर्यटन, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने पट्ट चित्रकला को स्थानीय सीमाओं के बाहर निकाल कर वैश्विक मंच तक पहुंचाया है। डिजिटल मीडिया के प्रयोग से यह कला आज ऑनलाइन मंचों पर भी प्रदर्शित और विक्रय की जा रही है जिससे इसकी पहुंच राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक हो गई है। आधुनिक युग के साथ आए बदलावों ने इस कला को नए अवसर प्रदान किए हैं वहीं बदलते समय के साथ यह कला कई परिवर्तनों एवं चुनौतियों से भी गुजर रही है। आधुनिकता के प्रभाव व तकनीकी विकास से पट्टचित्रों की मांग बढ़ रही है वरन् यह पारंपरिक कलाकारों की प्रतिभा को भी प्रभावित कर रही है। डिजिटल प्रिंटिंग मशीन निर्मित चित्रों की उपलब्धता ने हस्तनिर्मित पट्टचित्रों की मांग को प्रभावित किया है जिससे युवा कलाकार इस परंपरागत कला को सीखने के बजाय आधुनिक कलारूपों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। कम समय और अल्प लागत में कलाकृतियाँ उपलब्ध हो जाने के कारण पारंपरिक कलाकारों को आर्थिक क्षति से भी जूझना पड़ रहा है। रासायनिक रंगों और त्वरित उत्पादन की प्रवृत्ति के कारण कलाकारों पर तेजी से काम करने का दबाव बढ़ गया है जिससे चित्रों की गुणवत्ता में भी कमी आई है।

ओडिशा चित्रकला कि इस परंपरा की महत्ता को समझते हुए भारत सरकार ने इसके संरक्षण एवं संवर्धन के लिए कुछ विशेष पहल किए हैं। जहां पट्टचित्रों की इस पारंपरिक कला को भौगोलिक संकेत टैग (GI tag) प्रदान किया गया है वहीं (UNESCO) यूनेस्को ने वर्ष 2000 में ओडिशा के रघुराजपुर गांव को “हेरिटेज क्राफ्ट विलेज” का विशेष दर्जा प्रदान किया है जिससे यह पर्यटन उद्योग का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया है। उड़ीसा हैंडलूम एंड हैंडीक्राफ्ट डेवलपमेंट कॉरपोरेशन भी ग्रामीण कलाकारों के लिए डिजिटल प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं का आयोजन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा क्रोएशिया के राष्ट्रपति को पट्टचित्र पेंटिंग भेंट करते हुए,

[https://www.threads.com/@sankushmedia/post/DLE1XqT7vz/during-](https://www.threads.com/@sankushmedia/post/DLE1XqT7vz/during-his-visit-to-croatia-prime-minister-narendra-modi-gifted-a-pattachitra-pa)

[his-visit-to-croatia-prime-minister-narendra-modi-gifted-a-pattachitra-pa](https://www.threads.com/@sankushmedia/post/DLE1XqT7vz/during-his-visit-to-croatia-prime-minister-narendra-modi-gifted-a-pattachitra-pa)



कर कला के प्रचार प्रसार में अपना विशेष योगदान दे रहे हैं। पारंपरिक पट्ट चित्रकारों के संवर्धन के लिए राज्य सरकार एवं भारत सरकार ने भी कुछ नामचीन कलाकारों को पुरस्कृत एवं सम्मानित किया है।

जैसे :-



- पद्मश्री विनोद कुमार महाराणा
- ओडिशा ललित कला अकादमी द्वारा धर्म पद पुरस्कार से सम्मानित जगन्नाथ महाराणा
- राज्य आजीवन उपलब्धि पुरस्कार से सम्मानित गोकुल बिहारी पटनायक, दीनबन्धु महापात्र

शिक्षा और प्रशिक्षण सतत विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कला शिक्षा के माध्यम से पारंपरिक तकनीकों और मूल्यों को संरक्षित रखने में सहायता मिलती है। सतत विकास का आशय ऐसी विकास प्रक्रिया से है जिसमें आर्थिक प्रगति के साथ-साथ सांस्कृतिक संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन भी बना रहे। पट्ट चित्रकला पारंपरिक रूप से प्राकृतिक संसाधनों और पर्यावरण अनुकूलन तकनीक पर आधारित रही है। इसमें प्राकृतिक रंगों, जैविक पदार्थ तथा हस्तनिर्मित सामग्री का उपयोग किया जाता है अतः यह कला पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। विभिन्न कला संस्थानों, विश्वविद्यालयों तथा सांस्कृतिक संगठनों द्वारा पट्टचित्र कला के संरक्षण और प्रशिक्षण हेतु कार्यशालाएँ तथा पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। कई संस्थाएँ विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देकर प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम भी चला रही हैं। इससे कला शिक्षा के क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। कलाकार आज प्रशिक्षक, डिजाइन सलाहकार और सांस्कृतिक प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने लगे हैं। इससे नई पीढ़ी इस कला के प्रति जागरूक हो रही है। आधुनिक समय में जब पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता बढ़ रही है तब पट्ट चित्रकला जैसी पारंपरिक कलाएं सतत विकास का आदर्श प्रस्तुत करती हैं।

निष्कर्ष :-

ओडिशा के पारंपरिक पट्टचित्र कला न केवल अपने सौंदर्यबोध और तकनीकी विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है वरन् ओडिशा के धार्मिक, ऐतिहासिक, परंपरागत, कलात्मक एवं सांस्कृतिक महत्व की अभिव्यक्ति का माध्यम भी है। इन पट्टचित्रों में समय के साथ कई परिवर्तन देखने को मिले हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि यह कला समय के साथ विकसित होती रही है। आधुनिक पट्टचित्र केवल धार्मिक चित्रण तक ही सीमित नहीं है बल्कि उनके उद्देश्य बहुआयामी हैं। पारंपरिक कला को आज के आधुनिक परिपेक्ष में प्रस्तुत करके कलाकार इस विरासत को समाज तक पहुँचा रहे हैं। आधुनिक पट्टचित्रों में पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, शिक्षा, स्वच्छता और मानवीय मूल्य जैसे विषयों को शामिल किया जा रहा है, जिससे कला समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व निभा रही है। आधुनिक पट्टचित्रों का विकास केवल एक कलात्मक परिवर्तन नहीं वरन् सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया है। इसने यह साबित किया है कि भारतीय कला परंपरा में इतनी गहराई और लचीलापन है कि वह समय, समाज और तकनीक के हर परिवर्तन के साथ अपने आप को नया रूप दे सकती है। आज पट्टचित्र सिर्फ ओडिशा की ही नहीं बल्कि भारत की भी पहचान बन चुकी है। एक ऐसी कला जो धर्म की जड़ों से जुड़ी है, संस्कृति की आत्मा से प्रेरित है और आधुनिकता की उड़ान से संपन्न है। इस प्रकार पट्ट चित्रकला अतीत की विरासत और



वर्तमान की रचनात्मकता का सुंदर संगम है। यह अब न केवल परंपरा का प्रतीक है अपितु समाज में होने वाले परिवर्तनों को दर्शाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है।

संदर्भ सूची

- गौतम, सुरेंद्र कुमार. “भारतीय लोक कला : प्राचीन काल से आधुनिक युग तक” इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च (IJSSR), खण्ड 1, संख्या 1, जनवरी-फरवरी 2024, pp. 92-97. ISSN 3048-9490. IJSSR.
- अरविन्द, अचल, “समसामयिक भारतीय कला पर लोक कला का प्रभाव इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन एड्युकेशन एंड टेक्नोलॉजी (IJARETY), खण्ड 11, अंक 1, जनवरी 2024, पृष्ठ सं. 160-165. ISSN 2394-2975.
- जुरेल, पारुल एवं त्यागी, नमिता, लोक कला पर सोशल मीडिया का प्रभाव, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन मल्टीडिसिप्लिनरी साइंसेस (IJARMS), पीयर रिव्यू जर्नल, 2 मई 2025, खण्ड 8।
- सिंह, लोकाेश्वर, 'डिजिटल मीडिया और लोककला : सोशल मीडिया का प्रभाव' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन मल्टीडिसिप्लिनरी साइंसेस (IJARMS), खंड 8, अंक 2, मई 2025 पृष्ठ सं.7-12.
- Samantary, P. K. Patta chitra - it's past and present, Orissa Review, December 2005.
- Baral, B., & William, A., Patachitra Paintings Orissa: The Art of Making Picture on Cloth, (2019).
- Das, J. P., Pattachitras. The Jagannath icons of Puri, The Indian Magazine, (1982).
- Das, Monalisa, “A detail study of Pattachitra paintings: The heritage artwork of Raghurajpur, Odisha, International journal of development research, (IJDR), October 2023, vol. 13, issue 10, pp. 64015-64018
- Das, N. (2013). Patachitra of Orissa: a case study of Raghurajpur village. An Online Journal of Humanities & Social Sciences, 1(4), 247-251.
- Pareek, A., “Pattachitra” a traditional hand printed textile of Orissa. IJRRA ISSA: 23497688, VOL. 2, issue 4 Dec 2015, pp. 65-72